॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

(सम्पूर्ण पाठ - विस्तृत एवं सटीक हिंदी अर्थ सहित)

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥

अर्थ: श्री गुरु महाराज के चरण-कमलों की पावन धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को स्वच्छ व पवित्र करके, मैं भगवान श्री रामचंद्र जी के उस निर्मल यश का गान करता हूँ, जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाला है।

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौ पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार॥

अर्थ: हे पवनपुत्र हनुमान जी! मैं स्वयं को ज्ञान और बुद्धि से हीन जानकर आपका स्मरण करता हूँ। आप मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि और उत्तम विद्या प्रदान कीजिए तथा मेरे समस्त कष्टों, दुखों व मानसिक विकारों (काम, क्रोध, लोभ आदि) को दूर कीजिए।

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥

अर्थ: हे श्री हनुमान जी! आपकी जय हो। आप अगाध ज्ञान और समस्त दिव्य गुणों के अथाह सागर हैं। हे वानरराज! आपकी कीर्ति और यश तीनों लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल) में प्रकाशमान है।

राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥

अर्थ: आप मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के परम दूत हैं और अतुलनीय (जिसकी तुलना न हो सके) शक्ति व बल के धाम हैं। आप माता अंजना के पुत्र होने के कारण 'अंजनीपुत्र' और पवनदेव के पुत्र होने से 'पवनसुत' नाम से जाने जाते हैं।

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥ ३ ॥

अर्थ: हे परम पराक्रमी महावीर! आपका शरीर वज्र के समान सुदृढ़ और शक्तिशाली है। आप अपने भक्तों की दुर्बुद्धि (कुमति) का नाश करते हैं और उन्हें सद्बुद्धि, श्रेष्ठ विचार व सत्संगति (सुमति) प्रदान करते हैं।

कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥ ४ ॥

अर्थ: आपके शरीर का वर्ण स्वर्ण (सोने) के समान दमकता हुआ और रूप अत्यंत मनोहारी व सुंदर है। आपके कानों में दिव्य कुंडल सुशोभित हैं और आपके बाल सुंदर व घुंघराले हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५ ॥

अर्थ: आपके एक हाथ में वज्र और दूसरे हाथ में धर्म की विजय-ध्वजा सुशोभित है। आपके कंधे पर पवित्र मूंज की बनी हुई यज्ञोपवीत (जनेऊ) विराजमान है।

संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥ ६ ॥

अर्थ: आप साक्षात भगवान शिव के ग्यारहवें रुद्रावतार हैं और वानरराज केसरी के सुपुत्र हैं। आपके महान तेज, पराक्रम और शौर्य की संपूर्ण जगत श्रद्धापूर्वक वंदना करता है।

बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥ ७ ॥

अर्थ: आप समस्त विद्याओं के प्रकांड ज्ञाता, परम गुणवान और अत्यंत चतुर हैं। आप भगवान श्री राम के प्रत्येक कार्य को सिद्ध करने के लिए सदैव तत्पर और उत्सुक रहते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥ ८ ॥

अर्थ: आप भगवान श्री राम की पावन कथा और चरित्र को सुनने के परम प्रेमी (रसिया) हैं। आपके पावन हृदय में सदैव श्री राम, माता सीता और भ्राता लक्ष्मण निवास करते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥ ९ ॥

अर्थ: आपने अशोक वाटिका में माता सीता के समक्ष अत्यंत छोटा (सूक्ष्म) रूप धारण करके दर्शन दिए, और राक्षसों में भय उत्पन्न करने के लिए विकराल रूप धारण करके लंका नगरी को भस्म कर दिया।

भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज संवारे॥ १० ॥

अर्थ: आपने अत्यंत विशाल एवं शक्तिशाली रूप धारण करके दुष्ट असुरों का संहार किया और भगवान श्री रामचंद्र जी के सभी कठिन कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥

अर्थ: जब मेघनाद के शक्तिबाण से लक्ष्मण जी मूर्छित हो गए थे, तब आप द्रोणाचल पर्वत से संजीवनी बूटी लाकर उनके प्राणों की रक्षा की, जिससे अत्यंत हर्षित होकर भगवान श्री राम ने आपको हृदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ १२ ॥

अर्थ: भगवान श्री राम ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि हे हनुमान! तुम मुझे मेरे प्रिय भाई भरत के समान ही अत्यंत प्रिय और आत्मीय हो।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ १३ ॥

अर्थ: 'हजार मुखों वाले शेषनाग भी तुम्हारे यश का पूर्ण गान करते हैं'—ऐसा कहकर बैकुंठपति भगवान श्री राम ने आपको पुनः प्रेमपूर्वक अपने कंठ से लगा लिया।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥ १४ ॥

अर्थ: सनक, सनंदन आदि परम मुनि, ब्रह्मा जी आदि श्रेष्ठ देवता, देवर्षि नारद, वाणी की देवी सरस्वती और शेषनाग जी भी आपकी महिमा और गुणों का निरंतर गान करते हैं।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥ १५ ॥

अर्थ: यमराज, कुबेर और दसों दिशाओं के रक्षक (दिक्पाल) भी आपकी पूर्ण स्तुति करने में असमर्थ हैं, फिर सामान्य कवि या ज्ञानी विद्वान आपके अतुलनीय यश का पूर्ण वर्णन कैसे कर सकते हैं!

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥

अर्थ: आपने सुग्रीव को भगवान श्री राम से मिलाकर और उनकी मित्रता करवाकर उन पर महान उपकार किया, जिसके फलस्वरूप सुग्रीव को किष्किंधा का खोया हुआ राजपद पुनः प्राप्त हुआ।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना॥ १७ ॥

अर्थ: आपके हितकारी परामर्श और उपदेश को विभीषण ने स्वीकार किया, जिसके प्रभाव से वे लंका के अधिपति (राजा) बने; यह बात पूरे संसार में प्रसिद्ध है।

जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८ ॥

अर्थ: जो सूर्य पृथ्वी से हजारों योजन (करोड़ों मील) की दूरी पर स्थित है, उसे आपने अपने बाल्यकाल में एक मीठा, स्वादिष्ट लाल फल समझकर सहज ही निगल लिया था।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ १९ ॥

अर्थ: आपने भगवान श्री राम की मुद्रिका (अंगूठी) को अपने मुख में रखकर विशाल समुद्र को एक छलांग में लांघ लिया, आपके असीम पराक्रम के आगे इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २० ॥

अर्थ: इस संसार में जितने भी अत्यंत कठिन और असंभव प्रतीत होने वाले कार्य हैं, वे सभी आपकी कृपा और अनुग्रह से अत्यंत सरल और सुलभ हो जाते हैं।

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ २१ ॥

अर्थ: आप भगवान श्री राम के दरबार के प्रमुख द्वारपाल और रक्षक हैं। आपकी अनुमति और कृपा के बिना कोई भी भक्त प्रभु राम के दरबार में प्रवेश नहीं पा सकता।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२ ॥

अर्थ: जो भी प्राणी आपकी शरण में आता है, उसे संसार के सभी सुख और आनंद प्राप्त होते हैं। जब आप स्वयं रक्षक बन जाते हैं, तो किसी भी प्रकार का भय या संकट शेष नहीं रहता।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३ ॥

अर्थ: आपके प्रचंड तेज, वेग और पराक्रम को केवल आप स्वयं ही संभाल सकते हैं। आपकी एक प्रचंड हुंकार (गर्जना) से तीनों लोकों के समस्त दुष्ट और भयभीत प्राणी थर-थर कांपने लगते हैं।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥ २४ ॥

अर्थ: हे महावीर हनुमान जी! जहाँ कहीं भी आपका पावन नाम श्रद्धापूर्वक पुकारा जाता है, वहाँ भूत, पिशाच, प्रेत और कोई भी नकारात्मक शक्तियाँ पास भी नहीं आ सकतीं।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ २५ ॥

अर्थ: वीर हनुमान जी के पावन नाम का निरंतर जप और ध्यान करने से सभी असाध्य रोग नष्ट हो जाते हैं और भक्तों की समस्त शारीरिक व मानसिक पीड़ाएं समाप्त हो जाती हैं।

संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ २६ ॥

अर्थ: जो व्यक्ति अपने मन, कर्म और वचन से पूर्ण निष्ठा के साथ आपका ध्यान और स्मरण करता है, हनुमान जी उसे जीवन के प्रत्येक संकट व विपत्ति से मुक्त कर देते हैं।

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७ ॥

अर्थ: तपस्वी राजाधिराज भगवान श्री रामचंद्र जी सर्वश्रेष्ठ हैं, और आपने प्रभु श्री राम के सभी कठिन एवं अलौकिक कार्यों को अत्यंत सहजता से सिद्ध किया।

और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै॥ २८ ॥

अर्थ: कोई भी भक्त अपनी जो भी शुभ मनोकामना आपके समक्ष लेकर आता है, उसे उस इच्छा की पूर्ति के साथ-साथ जीवन का असीम, अक्षय और श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥ २९ ॥

अर्थ: सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग—चारों युगों में आपका तेज और प्रताप विद्यमान है। आपका पावन यश संपूर्ण ब्रह्मांड में प्रकाश की तरह फैला हुआ है।

साधु-संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे॥ ३० ॥

अर्थ: आप सज्जनों, साधु-संतों और धर्मपरायण लोगों के रक्षक हैं, दुष्ट असुरों और अधर्मियों का संहार करने वाले हैं तथा भगवान श्री राम के परम प्रिय और दुलारे हैं।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥ ३१ ॥

अर्थ: आपको माता जानकी (सीता जी) ने यह वरदान दिया है कि आप अपने भक्तों को आठों प्रकार की सिद्धियाँ और नवों निधियाँ (अपार सुख-समृद्धि) प्रदान करने में पूर्ण समर्थ हैं।

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२ ॥

अर्थ: आपके पास 'राम नाम' रूपी अचूक और परम कल्याणकारी औषधि (रसायन) है। आप सदैव भगवान श्री राम के अनन्य और निष्ठावान सेवक बने रहते हैं।

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै॥ ३३ ॥

अर्थ: आपकी भक्ति और गुणगान करने से साधक को भगवान श्री राम की प्राप्ति होती है और मनुष्य के जन्म-जन्मांतरों के समस्त संचित दुख और कष्ट नष्ट हो जाते हैं।

अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥ ३४ ॥

अर्थ: आपकी कृपा से मृत्यु के उपरांत भक्त श्री राम के परम पावन धाम (साकेत लोक) को जाता है, और यदि वह पुनः इस संसार में जन्म लेता है तो वह ईश्वर का सच्चा भक्त बनकर ही जन्म लेता है।

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥ ३५ ॥

अर्थ: यदि कोई भक्त अन्य किसी भी देवी-देवता का ध्यान न भी करे और केवल निष्ठापूर्वक हनुमान जी की ही सेवा-आराधना करे, तो भी उसे संसार के सभी सुख और परम शांति प्राप्त हो जाते हैं।

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ ३६ ॥

अर्थ: जो भी प्राणी परम बलशाली वीर हनुमान जी का स्मरण और ध्यान करता है, उसके जीवन के सारे संकट कट जाते हैं और समस्त शारीरिक व मानसिक कष्ट मिट जाते हैं।

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥ ३७ ॥

अर्थ: हे स्वामी हनुमान जी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो! आप मुझ दीन-हीन पर एक कृपालु और दयालु सद्गुरु की भांति अपनी असीम कृपा बरसाइए।

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ३८ ॥

अर्थ: जो भी साधक इस चालीसा का सौ (100) बार पूर्ण श्रद्धा से पाठ करता है, वह संसार के सभी बंधनों व कष्टों से मुक्त हो जाता है और उसे परमानंद की प्राप्ति होती है।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९ ॥

अर्थ: जो भी व्यक्ति इस हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करता है, उसे सभी कार्यों में अवश्य सिद्धि और सफलता मिलती है; इसके स्वयं देवाधिदेव भगवान शिव (गौरीश) साक्षी हैं।

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥ ४० ॥

अर्थ: गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि वे सदैव भगवान श्री हरि के दास हैं। हे नाथ! हे संकटमोचन हनुमान जी! आप सदा के लिए मेरे हृदय मंदिर में निवास कीजिए।

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥

अर्थ: हे पवनपुत्र, संकटों को हरने वाले और साक्षात मंगल की मूर्ति! हे देवों के स्वामी! आप प्रभु श्री राम, भ्राता लक्ष्मण और माता सीता जी के साथ मेरे हृदय में सदैव के लिए निवास करें।